गुरु नानक – सबद ८

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

सार: सचेतना एक परिवर्तनकारी यात्रा हो सकती है जो आलोचनात्मक सोच को निर्देशित करती है और करमों के प्रति जागरूकता बढ़ाती है। यह आत्म-चेतना को बढ़ावा देती है और केवल पारंपरिक प्रथाओं के पालन करने से अधिक आध्यात्मिक विकास से जोड़ती है।

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
अगर रस्म- पालन की पाबंदी अच्छाई का रास्ता दिखा सकती है तो इसका पालन करें; अगर रस्म परस्ती नेकी का साथ नहीं देती है तो उसमें शामिल न हों।

जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥
सभी प्राणी प्रकृति द्वारा निर्मित हैं; बिना सचेतना के उन्हें क्या लाभ हो सकता है?

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
बुद्धि में बहुमूल्य ख़ज़ाना होता है जिसकी स्वामित्व तभी प्राप्त किया जा सकता है जब सीखने को अपनाया जाए।

गुरा इक देहि बुझाई ॥
वह ज्ञान जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करता है, वही एकता की जागरूकता का प्रकाश प्रदान करता है।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥
सभी प्राणियों का रचयिता एक ही है और मुझे इस सच को नहीं भूलना चाहिए। (६)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सचेतना का अभ्यास करने से परस्पर जुड़ाव गहरा होता है। यह सच्ची और असली आत्म की खोज करने और एकता के दिव्य अलौकिक सार से जुड़ने में मदद करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com